पाठ्यक्रम की अवधारणा एवं वर्तमान पाठ्यक्रम की चुनौतियां

डॉ0 नागेन्द्र कुमार*

पाठ्यक्रम, विद्यालय की आधार शिला है, विद्यालय का संचालन, पाठ्यक्रम पर ही आधारित होता है। पाठ्यक्रम,पाठ्य–विवरण के साथ–साथ विभिन्न गतिविधियों को समाहित किये हुए होता है। यह विद्यार्थियों की अर्न्तनिहित क्षमताओं को विकसित करने में बहुत ही सहायक होता है।

पाठ्यक्रम को निम्नवत् समझ सकते हैं–

पाठ्यक्रम =पाठ्यविवरण +सह शैक्षणिक क्रियायें (पाठ्यसहगामी क्रियायें) + विद्यालय वातावरणीय अनुभव + अन्य

अर्थात् पाठ्यक्रम को अनुभवों की संपूर्णता के रूप में देखा जा सकता है यह केवल शैक्षणिक गतिविधियों से ही पूर्ण नही होता अपितु समग्र विद्यालयी जीवन ही पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग है।

पाठ्यक्रम में शैक्षणिक तथा सह–शैक्षणिक दोनों प्रकार की कियाओं को स्थान दिया गया है, परन्तु सामान्यतः यह देखा जाता है कि विद्यालय में शैक्षणिक क्रियाओं पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया जाता है। शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों के द्वारा पाठ्यक्रम को शैक्षणिक क्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है। हमारे पूरे विद्यालयी प्रणाली में विद्यार्थी के संज्ञानात्मक विकास को मुख्य उद्देश्य बना दिया गया है। जब विद्यालय या विद्यालयी प्रणाली की बात करें तो विद्यार्थियो के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास की बात होती है, परन्तु जब विद्यालयी प्रणाली में हो रहे गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करे तो सिर्फ हम बच्चे के मानसिक विकास तथा शैक्षणिक विकास पर आकर रूक जाते है। हालांकि विद्यालय में सह–शैक्षणिक गतिविधियों के लिए समय का निर्धारण किया गया है और उसके लिए कुछ चक्र निर्धारित किये गये है, परन्तु उसे शिक्षकों तथा विद्यार्थियों दोनों के द्वारा उपेक्षित कर दिया जाता है। यही कारण है कि सवा एक करोड़ आबादी वाले देश होने के बावजूद भी ओलम्पिक जैसे खेल महोत्सव में हमें एक या दो मैडल से ही संतुष्ट होना पड़ता है।

शुरू से ही बच्चे के मन में यह भाव बैठाया जाता है कि केवल पढ़ाई के द्वारा ही उसका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है और पढ़ाई ही एक मात्र साधन है जिसके द्वारा वह सामाजिक स्तरीकरण में उच्च स्थान प्राप्त कर सकता है। विद्याार्थियों के द्वारा भी कक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए पाठ को नही समझने की स्थिति में रटने की प्रवृत्ति का विकास होने लगता है। विद्यार्थी का एक ही उद्देश्य रह जाता है कि कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना, जिससे उसे कक्षा तथा परिवार में महत्व मिल सके, इसके लिए कभी–कभी बच्चों के द्वारा परीक्षा के दौरान नकल करने जैसी गतिविधियाँ भी देखी गई हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जो हमारा पाठ्यक्रम है वह न तो चरित्र का विकास कर पा रहा है और ना ही बच्चे में मौलिकता को बढ़ा दे पाने में सक्षम है, यह सिर्फ अंक बटोरो प्रणाली की प्रवृति का विकास कर पाने में सक्षम है। हमारे पाठ्यक्रम की दूसरी समस्या यह है कि जो परम्परागत पाठ्यक्रम है, जैसे कि B.A, B.Sc, B.Com, M.A ,M.Sc., M.Com., etc, इसमें व्यवसायिक विकास या कौशल विकास की बात नहीं होती है। इन सब पाठ्यक्रमों का व्यवसायिक पेशा से कोई खास संबंध नहीं है।

* **एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी**

हम अपने आस–पास देख सकते हैं कि B.A, M.A. यहाँ तक कि Ph.D जैसे उपाधि प्राप्त विद्यार्थी बेरोजगारी की समस्याओं से जूझ रहे हैं। इससे समाज में शिक्षा के प्रति एक उदासीनता का भाव पनपता है, जिससे समाज में शिक्षा के प्रति एक नकारात्मक दृष्टिकोण बनता है जो समाज तथा राष्ट्र दोनों के लिए हानिकारक है।

गाँधी जी कि विचारधारा थी कि शिक्षा रोजगारोन्मुख हो, उनके अनुसार वही शिक्षा कारगर है जो हमारे हाथों को काम दे सके और अगर शिक्षा इस उद्देश्य की पूर्ति में असमर्थ है तो शिक्षा की सार्थकता पर प्रश्न चिन्ह लगता है। अतः पाठ्यक्रम को इस प्रकार बनाया और व्यवस्थित किया जाए, जिससे परम्परागत पाठ्यक्रम में व्यवसायिक.विकास, कौशल.विकास एवं मौलिकता की बात हो सके और पाठ्यक्रम रोजगारन्मुख बन सकें, तथा नये–नये क्षेत्रों का सृजन हो सके।

पाठ्यक्रम की एक मुख्य चुनौती है कि पाठ्यक्रम में आदर्श बातें लिखी होती है, व्यवहारिक दृष्टिकोण की कमी होती है, विद्यार्थी जिन तथ्यों को विद्यालय में पढ़ता तथा समझता है वह वास्तविकता से मेल नही खा पाती है, और इससे विद्यार्थी के मन में मानसिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी को जब संविधान की धर्म निरपेक्षता की बात या फिर जातिगत भेदभाव विहीन समाज की बात पढ़ाई जाती है तो विद्यार्थी के मन में एक समतामूलक समाज का दृश्य उपस्थित होता है और वह सामाजिक सौहार्द के भाव से ओत–प्रोत होता है, वही बच्चा जब समाज में धार्मिक दंगे के बारे में जनता है, या फिर उसी बच्चे के साथ जातिगत भेदभाव किया जाता है, समाज में भी वह जाति की अहम् भूमिका देखता है तो वह यह पूरी तरह समझ नही पाता है कि क्या सही है, उसके शिक्षक की बात, किताब की बातें या फिर उसके समाज का व्यवहार। इससे एक मानसिक द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न होती है जो मानसिक संघर्ष को जन्म देती है और विद्यार्थी का भरोसा किताबी ज्ञान से उठने लगता है।

अतः पाठ्यक्रम को इस प्रकार निर्धारित और व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि एक विद्यार्थी वास्तविकता की स्थिति को देख और समझ सकें। जब एक विद्यार्थी अपनी विद्यालयी शिक्षा को पूरी करे तथा समाज में जिम्मेदार नागरिक के रूप में उतरदायित्व को सम्भालने के योग्य हो तो वह व्यवहारिक जीवन में परग्रही की तरह व्यवहार न करें। पाठ्यक्रम का विकास इस तरह किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थीयो के व्यवहारिक ज्ञान का दायरा व्यापक बन सके। आज–कल हमारे समाज में एक जुमला बन चुका है '**पढ़ा लिखा बेवकूफ**' इसका मतलब है पढ़ा लिखा होने के बावजूद बेवकूफ बने रहना। इसका सारा दोष विद्यार्थियों पर थोपा नहीं जा सकता है, बल्कि कहीं न कहीं इसके लिए हमारा पाठ्यक्रम भी दोषी है। जो इतनी लम्बी शिक्षा लेने के बावजूद व्यवहारिक ज्ञान का विकास करने में असक्षम रहा।

अतः पाठ्यक्रम का विकास इस तरह से किया जाना चाहिए, जिससे कि विद्यार्थियों को आदर्श जीवन के साथ–साथ व्यवहारिक जीवन का भी यथोचित ज्ञान मिल सके। कभी–कभी यह देखने को मिलता है कि पाठ्यक्रम का नवीनीकरण नहीं किया गया है, जिससे विद्यार्थी आस–पास होने वाली घटनाओं से अनजान बने रहते हैं। बदलते परिस्थितियों के साथ बदलाव को पाठ्यक्रम में अहम् स्थान मिलना चाहिए। ताकि विद्यार्थियों को समय के अनुसार अपने को वर्तमान समाज में ढ़ालने मे आसानी हो सकें।

पाठ्यक्रम का निर्माण इस तरह करना चाहिए कि शिक्षा एक आनंद की वस्तु बन जाए। वास्तविकता में पाठ्यक्रम, तो इस तरह का होता है कि जैसे बोझ हो शिक्षकों के लिए भी और विद्यार्थियों

के लिए भी। पाठ्यक्रम में समूह कार्य, समुदायिक कार्य, सांस्कृतिक कार्य, खेल–कूद इत्यादि को महत्वपूर्ण स्थान न देकर, संज्ञानात्मक पक्ष को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस तरह हम देखते हैं कि जो पाठ्यक्रम है वह मुख्यतः पाठ्य विवरण पर केन्द्रित हो जाता है और सह–शैक्षणिक क्रिया को उपेक्षित कर दिया जाता है। यदि पाठ्यक्रम को गतिविधि आधारित, व्यवहारिक तथा रचनात्मक उपागम में बनाया जाए तो पठन–पाठन एक मजेदार प्रक्रिया बन जाएगी। NCERT के पाठ्यक्रम को इस प्रकार बनाने का प्रयास किया गया है परन्तु व्यवहारिक रूप में उसका पालन नहीं हो पाता है।

पाठ्यक्रम में समावेशन पर आवश्यकतानुसार बल नही दिया गया है। पाठ्यक्रम को मुख्यतः औसत विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है, इसमें प्रतिभाशाली तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर यथोचित ध्यान नहीं दिया जाता है। आज हर तरफ समावेशन की बात की जा रही है, परन्तु अगर हम पाठ्यक्रम का सूक्ष्म अवलोकन करें तो पाते है कि समावेशन को मूलतः व्यवहारिक रूप से पाठ्यक्रम में नही अपनाया गया है। समावेशन की बात की जाए तो इसमें सामाजिक–आर्थिक परिवेश से, पिछड़े बीमारियों से प्रभावित (AIDS, Leprusy) विद्यार्थियों, SC/ST, शरणार्थियों तथा दिव्यांगों के संस्कृतियों को उचित तथा समान्नोचित स्थान पाठ्यक्रम मे दिया जाए।

हमारे समाज तथा राष्ट्र का बड़ा हिस्सा जिनको समावेशन के तहत् पाठ्यक्रम में उचित स्थान न मिल पाने के कारण उपेक्षित हो जाते हैं और उनका विकास अवरूद्ध हो जाता है और इस तरह वे समाज की मुख्यधारा से कटे रह जाते हैं। अगर हमारे पाठ्यक्रम में समावेशन को उचित स्थान मिल पाता तो जनसंख्या के एक बड़े भाग को मुख्य धारा मे जोड़ कर उनकी प्रतिभा का राष्ट्र विकास में सदुपयोग हो पाता।

बहुसंस्कृतिवाद (Multiculturalism) को भी पाठ्यक्रम में समुचित स्थान नहीं मिल पाया है और न ही स्थानीयता का ही समुचित समावेशन हो पाया है, अगर पाठ्यक्रम में बहुसंस्कृतिवाद को उचित स्थान मिल जाए और ये विद्यार्थियों के द्वारा आत्मसात् कर लिया जाए तो आज समाज में क्षेत्र, धर्म, भाषा, जाति, और संस्कृति के भेदभाव समाप्त हो जायेंगे और हमारे संविधान की अवधारणा को जमीनी स्तर स्वीकृत होगी। बहुसंस्कृतिवाद तथा स्थानीयता का आपस मे सह–संबंध है। हमारे आस–पास स्थानीय मूल्यों को भी पाठ्यक्रम में स्थान मिलना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में स्थानीयता के प्रति सम्मान तथा उचित भावना का विकास हो सके, इससे Think Globally, Act locally की स्थिति प्राप्त की जा सकेगी। इस आलेख में पाठ्यक्रम से संबंधित अनेक चुनौतियो का उल्लेख किया गया है तथा उन चुनौतियों का उपयुक्त समाधान भी हमारे सामने है। आवष्यकता है तो उन प्रस्तुत समाधान पर विचार विमर्श कर एक ऐसा पाठ्यक्रम विकसित करना जो विद्यार्थियो में निहित क्षमताओं का उपयुक्त विकास कर सके। एक ऐसा पाठ्यक्रम जिसमें समाज के हर वर्ग की संस्कृति को सम्मानपूर्वक उचित स्थान मिल सके। पाठ्यक्रम में संवेगात्मक विकास Development की भी बात की जाए ताकि विद्यार्थियों के द्वारा उचित बदलाव को आत्मसात् किया जा सके। विद्यार्थियों के द्वारा विभिन्नताओं को आत्मिक रूप से स्वीकृति मिल सकें ताकि एक शांतिपूर्ण सौहार्दपूर्ण समाज का विकास हो सके और हम विश्व शांति का संदेश दे सकें वैश्विक शिक्षा के पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।

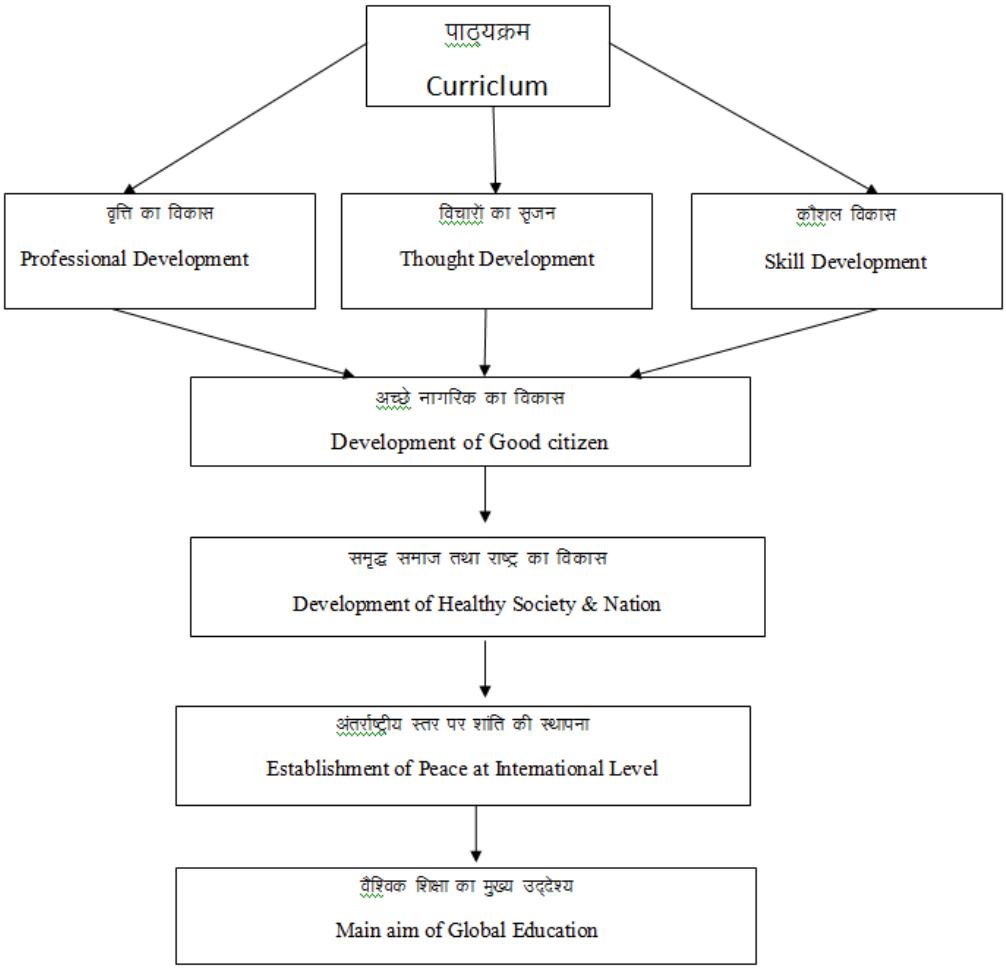

References :

1. Sharma, Ram Chandra (2002). Modern Methods of Curriculum Organization, Jaipur: Book Enclave, Jai Bhawan.
2. NCERT: National Curriculum Frame Work for School Education, New Delhi: 2000
3. NCTE: National Curriculum Frame Work For School Education, New Delhi:2005
4. NCTE: National Curriculum Frame Work For Teacher Education: Towards Preparing Professional And Human Teacher, New Delhi:2009
5. IGNOU: Curriculum And Instruction, New Delhi: 1997